International Journal of Advanced Academic Studies 2021; 3(3): 294-296

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(3): 294-296
Received: 08-04-2021
Accepted: 19-06-2021

अभिनन्दन पाण्डेय
शोध छात्र दर्शन एवं संस्कृति विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author:
अभिनन्दन पाण्डेय
शोध छात्र दर्शन एवं संस्कृति विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

भारतीय दर्शन में प्रमाण का स्वरूप

अभिनन्दन पाण्डेय

सारांश
ज्ञान की प्राप्ति के लिए क्या प्रमाण है? विभिन्न प्रमाणों का विचार भारतीय प्रमाण विज्ञान का एक प्रधान अंग माना गया है। तत्वज्ञान या यथार्थज्ञान को प्रमा कहते है, प्रमा के कारण की (अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रमाण कहते हैं।) प्रमाणों में हम ज्ञान व उसके साधनों का गहन चिन्तन प्राप्त करते है। ज्ञान आत्मा का आगतुक गुण है। आत्मा में ज्ञान तब उत्पन्न होता है जब ज्ञेय के सम्पर्क में आता है ज्ञान अपने विषय को स्वयं प्रकाशित करता है। ज्ञान के साधन की व्याख्या करना प्रमाण विज्ञान का मुख्य उद्देश्य है।

मुख्यशब्दः प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, प्रमा, अप्रमा

प्रस्तावना
कुछ दर्शन सम्यक् ज्ञान को ही प्रमाण मानते है। प्रमा यथार्थ अनुभव है जब कि अप्रमा किसी वस्तु के अन्यथा अनुभव है। यह संशयात्मक होता है। प्रत्येक प्रमा का विशिष्ट प्रमाण होता है। भारतीय दर्शन में प्रमाण उसे कहते है जो सत्य या सही ज्ञान प्रदान करने में सहायता करें। अर्थात् ज्ञान ही प्रमाण है। प्रमाण पर मुख्य रूप से न्याय चर्चा करता है लेकिन सभी दर्शनों में इसका कुछ न कुछ भाग है। न्याय सूत्र में कहा गया है–

''प्रमीयते अनेन इति प्रमाणम्''

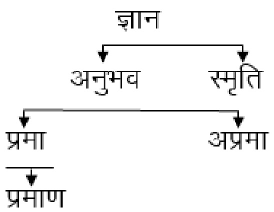

''प्रत्यक्षानुमानोपमानषब्दाः प्रमाणनि।''
प्रमाण की संख्या को लेकर भी विभिन्न दर्शनों में संख्या को लेकर मतभेद है। मुख्य रूप से चार प्रमा प्रत्यक्ष, अनुमिति, शाब्दि उपमिति है। जिनसे क्रमशः प्रत्यक्ष, अनुमान शब्द व उपमान उत्पन्न होते है। बाकि दर्शनों में प्रमाणों की संख्या इस प्रकार है, जैसे केवल एक प्रमाण प्रत्यक्ष को मानते है, और अन्य को इसी में सन्निहित मानते है। इसे हम एक सामान्य चार्ट से समझ सकते है कि कौन दर्शन प्रमाणों को मानता है।

तालिका 1: प्रमाण संख्या

दर्शन	प्रत्यक्ष	अनुमान	शब्द	उपमान	अर्थापत्ति	अनुपलब्धि
चार्वाक	✓					
बौद्ध / वैरोषिक	✓	✓				
सांख्य, योग, जैन जैमिनि, रामानुज	✓	✓	✓			
न्याय	✓	✓	✓	✓		
प्रभाकर	✓	✓	✓	✓	✓	
कुमारिल मीमांसक / शंकर	✓	✓	✓	✓	✓	✓

ये प्रमाणों की संख्या है।
वात्स्यायन कहते है–

"नीयते अनेन इति न्याय
प्रमाणैरर्थ परीक्षणं न्याय"

अर्थात प्रमाणों की परीक्षण ही न्याय है। अब हम प्रत्येक प्रमाण को समझेंगे।

प्रत्यक्ष–

"प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्"

प्रमाण चार्वाक का सम्पूर्ण दर्शन उसके प्रत्यक्ष प्रमाण पर निर्भर है, प्रमाण विज्ञान चार्वाक दर्शन की दिशा निश्चित करता है, जबकि चार्वाक प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानते है।

"प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्"

अर्थात् प्रत्यक्ष को किस प्रमाण की आवश्यकता है। चार्वाक के अनुसार यथार्थज्ञान की प्राप्ति से ही सम्भव है प्रत्यक्ष का अर्थ होता है– जो आँखों के सामने हो। प्रत्यक्ष के लिए तीन बिन्दु की उपस्थिति अनिवार्य है–1. इन्द्रिय 2. पदार्थ 3. सन्निकर्ष, न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष के दो भागों अलौकिक व अलौकिक में विभाजन होता है। गौतम प्रत्यक्ष की परिभाषा देते हुए कहते है–

"प्रत्यक्ष इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानम् अव्यपदेश्यम् अव्यभ्चिारि व्यवसायात्मंक प्रत्यक्षम्"–न्यायसूत्र

ज्ञान वह है जो अव्यपदेश्य, अत्यमिचारी और व्यवसायात्मक होता है। एक अन्य परिभाषा प्रत्यक्ष की

"ज्ञानाकरणकं ज्ञानं प्रत्यक्षम्"

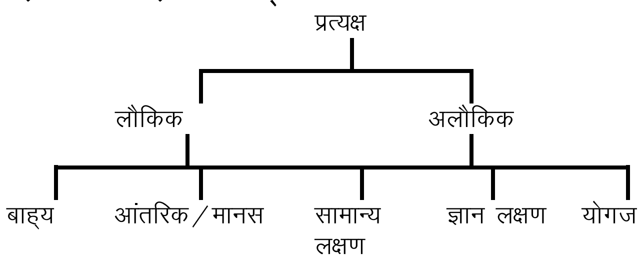

लौकिक प्रत्यक्ष एक अन्य दृष्टि से–

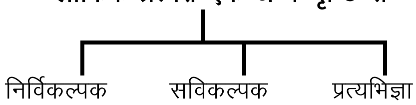

मानव प्रत्यक्ष एक ही प्रकार का होता है। बाहय प्रत्यक्ष में चक्षु, रसना, ध्राण, त्वक् और श्रोत ये पांच ज्ञानेन्द्रियां बाहय पदार्थों के सन्निकर्ष में आती है तथा मन और इन्द्रिय का सन्निकर्प होता है। एवं आत्मा तथा मन का संयोग होता है फिर प्रत्यक्ष होता है, इन सबके मेल से।

अलौकिक प्रत्यक्ष के अन्तर्गत सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष का हमें प्रत्यक्ष साधारणातया नहीं होता जैसे–गोत्व का प्रत्यक्ष।

अलौकिक प्रत्यक्ष के अन्तर्गत ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष वह है जैसे किसी प्राकृतिक फूल को देखकर उसमें खुशबू है का ज्ञान प्राप्त करना। योगज प्रत्यक्ष योगियों द्वारा भूत, वर्तमान एवं भविष्य का ज्ञान है।

निर्विकल्पक प्रत्यक्ष ज्ञान की पूर्वावस्था है जैसे कोई गाय दूर है हमें यह लग रहा कि कोई सफेद जानवर आ रहा है हम उसे स्पष्टतः पहचान नहीं पा रहे है।

सविकल्पक प्रत्यक्ष ज्ञान की वह अवस्था है जिसमें हम पूर्ण सुनिश्चित है कि यह सफेद रंग की गाय है पूर्व ज्ञान निर्विकल्पक सम्वेदन हैं तथा उत्तर ज्ञान सविकल्पक प्रत्यक्ष है।

मीमांसक प्रमाकर प्रत्यक्ष को इस प्रकार परिभाषित करते हैं–

"साक्षात् प्रतीति प्रत्यक्षम्"

अर्थात प्रत्यक्ष ज्ञान वह है जिसमें विषय की साक्षात् प्रतीति होती है। मीमांसक कहते हैं कि किसी भी विषय का प्रत्यक्षीकरण तभी होता है जब आत्मा, ज्ञान व विषय का समावेश हो। प्रत्यक्ष ज्ञान की पहली अवस्था वह है जिसमें विषय की प्रतीति मात्र होती है, जबकि दूसरी अवस्था वह है जिसमें हमें वस्तु का स्वरूप, उसके आकार प्रकार का ज्ञान होता है। इस अवस्था में हम सब कुछ जानने की अवस्था में होते है कि वह किस प्रकार की वस्तु है। प्रत्यक्ष प्रमाण को सभी दर्शन स्वीकार करते है कुछ दर्शन प्रत्यक्ष में ही कुछ अन्य प्रमाणों को भी मान लेते है। प्रत्यक्ष प्रमाण एक मूल प्रमाण है जिसे सामान्य जीवन में बहुत उपयोगी माना जाता है, जिसकी मदद से न्यायालयों में न्याय होता है। प्रत्यक्ष प्रमाण को एक आधार भूत प्रमाण भी कहा जा सकता है।

सांख्य दर्शन की सांख्य कारिक में प्रत्यक्ष–

"प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टम्" सांख्यकारिका

अर्थात प्रत्येक ज्ञानेन्द्रिय से उसके विषय का निश्चित पूर्वक ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण कहलाता है। बौध दर्शन के धर्मकीर्ति प्रत्यक्ष को इस प्रकार बताते है–

"अभ्रान्त ज्ञानम् प्रत्यक्षम्" धर्मकीर्ति

अर्थात् अभ्रान्त यानी भ्रमरहित ज्ञान ही प्रत्यक्ष है।
जैन दार्शनिक कहते हैं कि–

"विशदं प्रत्यक्षम"

अर्थात् पूर्णतः स्पष्ट ज्ञान ही प्रत्यक्ष है। इनका प्रत्यक्ष तीन प्रकार का है। अवधि, मन पर्याय व केवल ज्ञान–अवधिज्ञान ज्ञान सीमित देश काल का ज्ञान है, मनःपर्याय दूसरे के मनोभाव का ज्ञान तथा केवल ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान मानी यह सीमा रहित ज्ञान है।

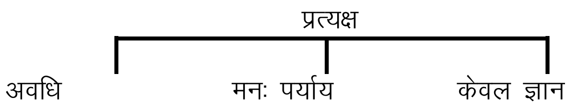

अनुमान प्रमाण–चार्वाक दर्शन ही केवल अनुमान प्रमाण को स्वीकार नहीं करता, बाकी सभी दर्शन अनुमान प्रमाण को मानते है। अनुमान शब्द का विश्लेषण करने पर यह दो शब्दों से बना है–'अनु' और 'मान'। अनु का अर्थ पश्चात् और मान का अर्थ ज्ञान होता है। अनुमान का अर्थ हुआ–'बाद का ज्ञान'।
गौतम मुनि

'तत्पूर्वकम् प्रत्यक्ष मूलक'

को अनुमान कहा है कि अनुमान वह ज्ञान है जिसमें प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर जाया जाता है। अनुमान अपनी उत्पत्ति के लिए प्रत्यक्ष पर निर्भर है। अनुमान में किसी विषय का साक्षात्कार नहीं होता। यह ज्ञान संशय, भ्रम व अनिश्चितता का मिला–जुला रुप होता है।

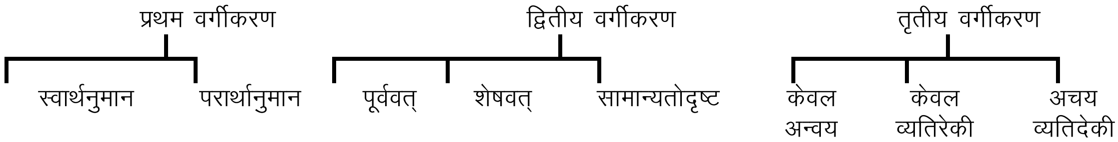

अनुमान में मुख्य रूप से पांच अवयव होते है जिसके आधार पर अनुमान किया जाता है जो निम्न है

1. प्रतिज्ञा–जिसे हम सिद्ध करना चाहते है। जैसे–पहाड़ पर आग है।
2. हेतु–प्रतिज्ञा की सिद्धि के लिए जो युक्ति होती है–क्योंकि पहाड़ पर धुआं है।
3. उदाहरण–दृष्टांत उपस्थित करना उदा0 है। जैसे हमारे घर के रसोई में भी धुंऐ के साथ आग रहती है।
4. उपनय–पक्ष में उपस्थित करना–पहाड़ पर धुंआ है।
5. निगमन–जिसे सिद्ध करना है।–जैसे अतः पहाड़ पर आग है।

अनुमान पूर्णतः व्याप्ति पर आधारित होता है। व्याप्ति का शब्दिक अर्थ है विशेष प्रकार से सम्बन्ध (वि+आप्ति) यह कभी नहीं टूटने वाले सम्बन्ध है। अनुमान का उद्देश्य पक्ष एवं साध्य के बीच सम्बन्ध है। अनुमान का उद्देश्य पक्ष एवं साध्य के बीच सम्बन्ध स्थापित करना है।

अनुमान के प्रकार में स्वार्थानुमान जब स्वयं के लिए अनुमान किया जाता है। परार्थानुमान जब पांच अवयवों को लेकर दूसरे के लिए अनुमान किया जाता है।

पूर्ववत् अनुमान जिससे ज्ञात कारण के आधार पर अज्ञात कार्य का अनुमान किया जाता है–जैसे बादल देखकर वर्षा का अनुमान सामान्यतोदृष्ट यदि दो वस्तुओं को साथ–2 देखे तब एक को देखकर दूसरे का अनुमान सामान्योदृष्ट है।

केवलान्वयी में केवल भावात्मक उदा0 होते हैं।

केवल–व्यतिरेकी में व्याप्ति की स्थापना निषेधात्मक उदाहरणों से होती है।

अन्वय–व्यतिरेकी–दोनों विधियों का समाहित रूप है।

अनुमान की सामान्य रूप से विवरण अनुमान पर ही आधारित होती है। सभी चार्वाक को छोड़कर इसे मानते है, उपमान को भी अनुमान में कुछ दर्शन सम्मिलित कर देते है।

शब्द प्रमाण–शब्द प्रमाण को केवल चार्वाक, बौद्ध व वैशेषिक ही नहीं मानते है ताकि सभी दर्शन इसे स्वीकार करते है। किसी विश्वसनीय व्यक्ति के वचन से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द कहते है।, सभी पुरुषों के वचनों की शब्द ज्ञान नहीं कहा जा सकता है।

न्यायसूत्र में कहा गया है–

''आप्तोपदेशः शब्दः''

शब्दों का विभाजन दो प्रकार से है–

1. दृष्टार्थ
2. अदृष्टार्थ

ऐसे शब्द का ज्ञान जो संसार की प्रत्यक्ष की जाने वाली वस्तुओं से सम्बन्धित है। उदा0–मैं कहता हूं कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज में स्थित है तो यह वहां उपस्थित है।

ऐसा शब्द जो प्रत्यक्ष रूप में नहीं होता लेकिन ये होते है या माने जाते है जैसे–पाप–पुण्य, धर्म अधर्म इत्यादि। शब्द का वर्गीकरण एक अन्य दृष्टि से भी हुआ है–

1. वैदिक शब्द
2. लौकिक शब्द

वैदिक शब्द को संशयहीन तथा विश्वास पूर्ण माना जाता है। वेद की बातों को वैदिक शब्द कहा जाता है।

लौकिक शब्द मानवकृत होते है, लौकिक शब्द सत्य भी हो सकते है और असत्य भी।

मीमांसक में प्रभाकर केवल श्रुति को ही स्वतंत्र शब्द प्रमाण के रूप में स्वीकार करते है।

उपमान प्रमाण

पूर्वानुभूत वस्तु के सदृश होने के कारण जहां किसी नई वस्तु का ज्ञान हो उसे उपमिति कहते है तथा उसके कारण को उपमान कहते है, हमें नील गाय का ज्ञान हो गया है कि नीलगाय वह पशु है जो गाय जैसी होती है, किन्तु कभी हम नीलगाय का प्रत्यक्ष हुआ नहीं है, बाद में हम कभी जंगल गये और गाय की तरह पशु दिखाई देते है तो हमें तुरन्त ज्ञान हो जाता है कि अमुक पशु नीलगाय है।

उपमान प्रमाण की केवल मीमांसा, अद्वैत व न्याय द्वारा ही स्वतंत्र प्रमाण माना जाता है। सांख्य योग, जैन, बौद्ध वैशेषिक व चार्वाक इसे अन्य प्रमाणों से ही अर्न्तनिहित मान लेते है।

अर्थापत्ति प्रमाण–इस प्रमाण की स्वतंत्र रूप से प्रभाकर, कुमारिल व शंकर मानते है। नैयायिक मीमांसक इसे प्रत्यक्ष में शामिल कर लेते है मीमांसक के अनुसार किन्हीं दो तत्वों के विरोधाभास की दूर करने के लिए जब एक तीसरे तत्व की कल्पना की जाती है तो जो ज्ञान प्राप्त होता है वह यथार्थ ज्ञान है तथा इस ज्ञान की प्राप्त करने वाले प्रमाण की 'अर्थापत्ति' कहते है।

जैसे–देवदत्त दिनभर भूखा रहता है, फिर भी मोटा होता जा रहा है यहां तीसरे तत्व की कल्पना करनी पड़ेगी अर्थात् देवदत्त रात में खाना खाता हैं।

अनुपलब्धि प्रमाण–इसे केवल कुमारिल व शंकर मानते है। न्याय दर्शन इसे प्रत्यक्ष में ही शामिल मान लेता है। अभाव का ज्ञान जिस प्रमाण की सहायता से होता है उसे ही अनुपलब्धि कहते है। जैसे–हम मंदिर में गये और वहां पुजारी उपस्थित नहीं है, मानी पुजारी का उस समय मंदिर में अभाव है।

प्रमाण न हो तो सामान्य जीवन जीना दुर्लभ हो जायेगा, प्रमाणों की बड़ी महती भूमिका भारतीय दर्शन में है जिससे समाज व संसार दिन–प्रतिदिन संचालित हो रहा है। प्रमाणों पर मुख्य प्रयास न्याय, चार्वाक व मीमांसकों का रहा है।

संदर्भ

1. सूरि, हरिभद्र (1997) षड़दर्शन समुच्चय, भारतीय ज्ञान पीठ नई दिल्ली।
2. दत्त एवं चटर्जी (1994) भारतीय दर्शन, पुस्तक भण्डार पटना।
3. शर्मा चन्द्रधर (1998) भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।
4. राधाकृष्णन–भारतीय दर्शन, भाग 1–2
5. हेमचन्द्राचार्य (1939) 'प्रमाण मीमांसा' सिंधी जैन ग्रंथ माला
6. गौतम–न्याय सूत्र
7. बारलिगे एस0एस0 (1965) ऐ मॉडर्न इंट्रोडक्सन टू इंडियनलॉजिक नेशनल पब्लि0 हाउस दिल्ली